पाठ 2. सदाचार का ताबीज़

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में स्व-जागरूकता का कौशल विकसित करना है ताकि वे अपनी पसंद व नापसंद की पहचान कर सकें। हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'सदाचार का ताबीज़' समाज में फैले भ्रष्टाचार तथा भ्रष्टतंत्र के रेशे-रेशे पर करारी व्यंग्यात्मक चोट करता है। भ्रष्टाचार के बढ़ते प्रभावों से निपटने में असमर्थ होते भ्रष्टतंत्र पर लिखी इस व्यंग्य कथा में भ्रष्टाचार के दायरे का बारीक उल्लेख दिया गया है।

पाठ का सारांश

एक राज्य में हल्ला मच गया कि भ्रष्टाचार बहुत फैल गया है। दरबारियों ने राजा को बताया कि वह बहुत बारीक होता है अत: दिखाई नहीं देता। आखिरकार विशेषज्ञों की एक टीम को भ्रष्टाचार को ढूँढ़ निकालने का काम सौंपा गया। दो महीने की खोजबीन के बाद भ्रष्टाचार मिला, और बहुत-सा मिला। उसे पारिभाषित किया गया। वह ईश्वर के समान सर्वशक्तिमान बताया गया। उसकी उपस्थिति सिंहासन में बताई गई। हर कदम पर रिश्वतखोरों का बोलबाला बताया गया। भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए व्यवस्था में बड़े परिवर्तन की आवश्यकता की बात की गई। ऐसे परिवर्तन भला दरबारियों को कैसे रास आते! बात बढ़ते-बढ़ते एक साधु के द्वारा समस्या का हल निकालने तक आ पहुँची। यहाँ धर्म-गुरुओं पर लेखक ने निशाना साधा है। सदाचार के ताबीज़ ठेके पर बनाए गए। परीक्षण किया गया तो पाया गया कि अधिकतर लोग विवशता में भ्रष्ट होते हैं। महीने के आखिरी दिनों में मज़बूरियाँ आम आदमी के ईमान को दबा देती हैं। इस प्रकार, भ्रष्टाचार को कहानी में इतना ताकतवर बताया गया है कि वह मज़बूत इनसान के ईमान पर भी चोट कर सकता है।

अध्यापन संकेत

व्यंग्य रचना की भाषागत विशेषताओं के बारे में चर्चा करें। इसके बाद पाठ का पठन, वाचनगत त्रुटियों का निराकरण करें। पाठ पूरा होने पर छोटे-छोटे प्रश्न पूछकर बच्चों के अर्जित ज्ञान व कक्षा में ध्यान तथा समझ का परीक्षण किया जा सकता है। यथाप्रसंग शब्दों के अर्थ तथा कुछ आवश्यक लेखकीय अभिप्रायों का स्पष्टीकरण अवश्य करें।

पाठ से संबंधित कुछ बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें–

- **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
- बच्चों को बताएँ कि वाक्य में क्रिया एक शब्द की भी हो सकती है और कई शब्दों का समूह भी क्रिया का काम कर सकता है। इन शब्द-समूहों को क्रिया पदबंध कहा जाता है। इसे उदाहरण देकर समझाएँ। यहाँ यह बताना आवश्यक होगा कि इन शब्दों में एक शब्द मूल क्रिया अवश्य होगा।
- संधि-विच्छेद में शब्दों का संबंध बताने वाली विभक्ति अपने मूल रूप में आ जाती है, यह समझाएँ।
- वाक्य बनाते समय वाक्य ज़्यादा लंबे न हों, उनमें लिंग-वचन व शाब्दिक अशुद्धियाँ न हों, इस बात का ध्यान रखें। अशुद्धियाँ होने पर उनका निराकरण अवश्य करवाएँ।
- अलग-अलग बच्चों की राय में भ्रष्टाचार के अलग-अलग कारण हो सकते हैं। उन सभी कारणों का संग्रह कर कक्षा में उनपर चर्चा की जा सकती है।

- भ्रष्टाचार मिटाने के उपायों पर चर्चा के पहले उनके कारणों का ज्ञान बच्चों को अवश्य हो, यह सुनिश्चित करें। बच्चों द्वारा दिए गए सुझावों पर सामूहिक चर्चा भी करवाएँ।